बचपन का त्योहार

लेखक- नितिन भास्कर जड़िया और सौगात बनर्जी

यह कहानी बचपन मनाओ त्योहार की उस ऊर्जा से प्रेरित है, जिसने छतरपुर ज़िले के आंगनवाड़ियों को रंग, हँसी, सीखने और प्रेम से भर दिया। यह एक ऐसा उत्सव था जिसमें हज़ारों माता-पिता, समुदाय के सदस्य और बच्चे एक साथ आए—यह दिखाने के लिए कि बचपन का असली अर्थ क्या है: खेल, आनंद और मिल-जुलकर सीखना।

इस प्रयास को साकार करने में ज़िला प्रशासन की दूरदर्शिता और निरंतर सहयोग अहम रहे— श्री संदीप जी.आर. (डीएम) और श्री राजीव सिंह (डीपीओ) का मार्गदर्शन, साथ ही छतरपुर के सभी सीडीपीओ, पर्यवेक्षक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिकाओं की अथक मेहनत के बिना यह संभव नहीं हो पाता। इन सभी की सामूहिक कोशिशों ने न केवल इस कहानी को जन्म दिया, बल्कि एक आंदोलन की नींव भी रखी। हम सुश्री खुशी उपाध्याय के प्रति आभार प्रकट करते हैं, जिनके संवेदनशील संपादन ने इस कहानी को निखारा। साथ ही श्री पंकज मिश्रा का विशेष धन्यवाद, जिन्होंने हमारी टीम का मार्गदर्शन किया, शब्दों और दृष्टि को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस विचार का बीज बोने और पूरे प्रयास में हमारे साथ चलने के लिए सुश्री श्वेता गुहान को विशेष धन्यवाद, तथा इस कार्य की क्षमता में विश्वास रखने और खेल के माध्यम से प्रत्येक बच्चे के सीखने के अधिकार का समर्थन करने के लिए एकस्टेप फाउंडेशन की बचपन मनाओ टीम को भी विशेष धन्यवाद।

कॉपीराइट © 2025 की एजुकेशन फाउंडेशन

यह पुस्तक और इसके पूरक इस शर्त के अधीन बेचे जाते हैं कि उन्हें व्यापार या अन्यथा, लेखक की पूर्व लिखित सहमति के बिना किसी भी प्रकार के बंधन या आवरण में उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा, या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय इसके कि वे जिस रूप में प्रकाशित हुए हैं और बिना किसी समान शर्त के, जिसमें यह शर्त बाद के खरीदार पर लगाई गई हो और ऊपर आरक्षित कॉपीराइट के तहत अधिकारों को सीमित किए बिना। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को इस पुस्तक और इसके पूरक के कॉपीराइट स्वामी की पूर्व लिखित अनुमति के बिना पुनरुत्पादित, संग्रहीत या पुनर्प्राप्ति प्रणाली में पेश नहीं किया जा सकता है, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्यथा) प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

पहली छपाई, 2025

सामग्री विकास और संपादन- नितिन भास्कर जडिया, सौगत बनर्जी और ख़ुशी उपाध्याय द्वारा

डिजाइनर- मून अरूण

आँगनवाड़ी

सुबह के 7 बजे हैं, हल्की धूप आँगन में उतर रही है। आरती आँगन की मिट्टी में झाड़ू चला रही है। आज फिर बच्चों के खेलने का कौना तय हो रहा है, बच्चे केंद्र आ कर खेलने की ही तो मांग करते हैं। पगडंडी से बच्चों की किलकारियाँ सुनाई दे रही हैं। कोई चप्पल घसीट रहा है, कोई झोले में खिलौने लाया है और कोई छोटी बहन का हाथ पकड़े उसे आनगंवाड़ी लाया है। रंग-बिरंगे कपड़ों में बच्चे फूला के पीछे-पीछे आ रहे हैं।

हमाई जा माटी की गोल रोटी बनी
देखो हमने जो माटी को घर बनाओ
?!

नोनी को आज उसके पिता छोड़ने आंगनवाड़ी आए है, आंगनवाड़ी पहुँचते ही नोनी दौड़ कर अंदर से कुछ कागज और मिट्टी के खिलौने लेकर आई, और बोली "पिता जी पिता जी देखो जो घर हमने बनाओ तो केसो है जब हम बड़े हो जेहें तो एसई घर बनाबी''

"हव ई में का धरो जे माटी के घर बनाबे मे, लरका बीटीयन को तो जो खेलई आए जे फूला दीदी जाने का खेल खिलाऊत रातीं। आंगनवाड़ी आके कछू पढ़ो लिखो खेल में का धरो?"

नोनी का साथी गुड्डू अपनी बनाई हुई मिट्टी की गोल सजी रोटी लाकर कहता है, "देखो चाचा जा हमने बनाई हव ठीक है?" गुड्डू और नोनी के अंदर छुपी रचनात्मकता देख पिता जी को हंसी नहीं आई।

"काय फूला दीदी इते बच्चन खाँ अकेले खेलई खिलाओ जात और कछु नई सिखाओ जात का? जे बच्चा लिखबो पढ़बो कबे सीखें ?"

हिन्दी वर्णमाला
अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए
ऐ ओ औ अं अः
मतलब अभिभावक दैनिक दिनचर्या के बारे में जानते ही नहीं हैं?
गेंद घुमाई, गिनती आई, खेल- खेल में ही समझ बढ़ाई
A B C D

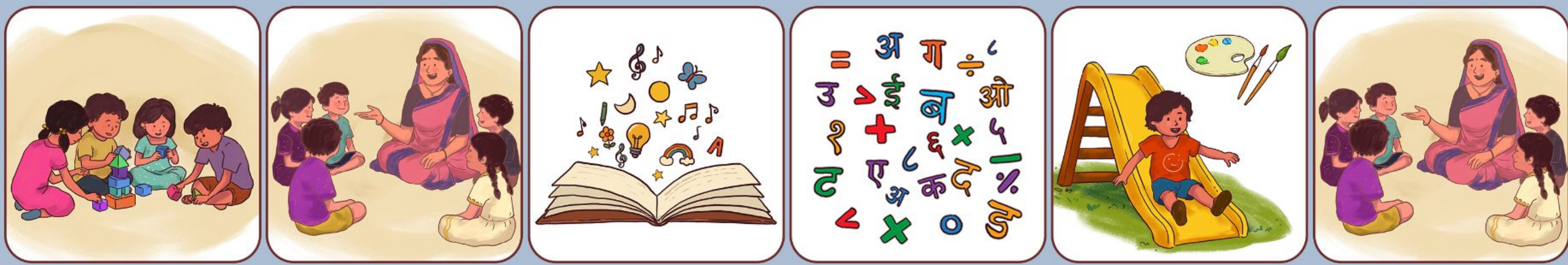

फूला की आँखें एक पल के लिए ठहर गयी मानो किसी ने उसके दिल के अंदर कुछ कह दिया हो। फूला की आखें भर आती है और मन से एक आवाज़ उठती है...

“काश, बच्चों के माता-पिता भी देख पाते... कि उनके बच्चे खेल में कितना कुछ सीख रहे हैं। बोलना, जोड़ना, सोचना, लिखना ... सब खेल में ही तो छिपा है।”

पीछे से एक आवाज आई, “दीदी परेशान दिख रही हो क्या हुआ?” फूला जब मुड़ी तो आरती एक सुंदर सी मुस्कान लिए खड़ी थी ।

“आज नोनी और उसके पिता की बात सुनी, उन्हें ये अंदाजा ही नहीं है कि आंगनवाड़ी में बच्चों के लिए पूरे दिन खेल गतिविधियों की दिनचर्या है। इसी से तो बच्चे सीख रहे हैं, स्वतंत्रता से खेलना, निर्मल समय में अभिवादन, शब्दों का खेल, गणित का जोड़-तोड़, और अपने साथियों से घुलना-मिलना।" फूला बोली।

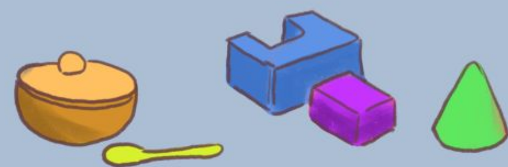

हम क्या करेंगे?

फिर वही सुबह, वही बच्चे और चहचहाता आँगन। फूला के मन की उदासी को भाँपते हुए आरती बोली “दीदी क्यों न अभिभावाको और गाँव के लोगों को बताया जाये की उनके बच्चे आँगनवाडी केंद्र पर क्या करते हैं?”

“दीदी हमाए पिता जी खों बुला हो? हमे जा पेंटिंग दिखाउने” रंगों से भरे कागज को दिखाते हुए कृष्णा बोली। “हम भी कहानी सुनाबी” गौरी की मस्ती भरी आवाज सुनाई दी। गहरी सांस और बच्चों के सिर को दुलारती हुई फूला को शायद जवाब मिल गया और वह बोली “हाँ हाँ बेटा सब को बुलाएँगे।”

“पर दीदी, बुलाएंगे कैसे?” आरती बोली।

फूला तुरंत बोली “आरती हम बहुत सारे त्योहार मनाते हैं अब एक त्योहार बचपन भी। उस दिन को हम कहेंगे “बचपन मनाओ त्योहार”। फूला मुस्कुराई और वह इस त्योहार की कल्पना में डूब गई।

यह त्योहार बड़ी धूम-धाम से मनाएंगे!!
और मजेदार गतिविधियां भी करवाएंगे!!

“बचपन मनाओ त्यौहार हम बड़ी धूम धाम से मनाएंगे, केंद्र को अच्छे से सजायेंगे, त्यौहार मैं सभी अभिभावक और गाँव के लोगों को आमंत्रित करेंगे, अभिभावक और बच्चों के लिए मजेदार गतिविधियाँ आयोजित करेंगे। कुल मिलाकर केंद्र पर एक उत्सव का माहौल होगा।”

“दीदी हम इतना कुछ दोनों मिलकर अकेले कर लेंगे?”

“अरे नहीं नहीं अभिभावक भी हमारा साथ देंगे। मुझसे रहा नहीं गया और मैंने इस बारे में दीपक, सुरेश की मम्मी को बताया। वह तो आज से त्यौहार की तैयारियां कराने में मदद करने के लिए तैयार थीं।”

“अरे वाह दीदी।” आरती उँगलियों पर दिन गिनते हुए झूम कर बोली “अब तो बस कुछ ही दिन बचे है।”

बच्चों की वर्कशीट भी लगाएँ?

अगला दिन

"आरती जल्दी जल्दी सारे काम निबटा लो आज केंद्र को बचपन मनाओ त्योहार के लिए तैयार भी तो करना है।"
दीदी हमे कैसी तैयारी करनी है ?
"अरे बच्चों के खेलने के लिए केंद्र का आँगन सजाना है, चित्रकला के लिए रंग और कागज लाना है , मिट्टी के खिलौने के लिए मिट्टी तैयार करना है, गीत, कहानी, कविता की तैयारी, बच्चों द्वारा अपने माता-पिता के साथ की गई क्वक्शींट को दीवारों पर सजाना, बच्चे अपने माता पिता के साथ खेलेंगे और इन सब गतिविधियों में साथ रहेंगे तब ही तो वे जानेंगे की इन गतिविधियों से कैसे उनके बच्चे सीख रहे हैं। और हाँ गाँव वालों, अभिभावक और अतिथियों को आमंत्रण देना मत भूलना।"

आज आंगनवाड़ी में चहल-पहल का माहौल है- सबसे छोटी लीला भी लोगों को आमंत्रित करने के लिए कार्ड बनाने में जुट चुकी है और पीले चावल की थाली तैयार कर रही है।

कल आंगनवाड़ी में जरूर आईएगा और देखिएगा!
आंगनवाड़ी में कछु हो रव का?

दैनिक दिनचर्या पूरी करने के बाद बच्चों को विदा कर, फूला और आरती त्योहार की तैयारियों मैं वापस जुट गए।

"दीदी कल मंगलवार है, बचपन मनाओ त्योहार का दिन। हमारे पास तो बस कुछ घंटे ही बचे है।"

“काय फूला दीदी जे लरका बिटिया तो आज भोत उछल कून्द मचा रय। दोंदरा दयें फिर रय बगल वालन की बिटिया माटी सान रई ती कात ती के कल अंगानवाडी मे खेल खिलौना बनाबी। हमाओ सुरेश तो कल से एक निमंत्रण कार्ड सो बना रव, के रव तो काल त्योहार है सो गाँव भर खाँ बुलाने। आंगनवाड़ी मे कछु मजेदार हो रओ का?” सुरेश की माँ ने पूछा।

“हाँ है तो सही, पर वो कल आने पर ही पता लगेगा।”

फूला और आरती हँसते और बातें करते बच्चों के बनाए आमंत्रण और पीले चावल उठा गाँव मे देने निकल गईं।

त्योहार का दिन

भोर होते ही फूला और आरती आंगनवाड़ी केंद्र पहुंच गईं और तैयारियों मे जुट गयी।

फूला ने बच्चों के लिए खेल के कौने तैयार किए बच्चों के खिलौने आँगन में सजाये, अभिभावकों के बैठने की व्यवस्था की।

धीरे-धीरे और भी अभिभावक आंगनवाड़ी आए और केंद्र की साज सज्जा में फूला और आरती की मदद करने लगे।

9 बज चुके थे फूला को जिस घड़ी का इंतजार था वो आ चुकी है। गांव के हर घर में हलचल है। माथे पर रोली, और चेहरे पर चहकती मुस्कान लिए, दीदी और छोटी नॉनी सभी के स्वागत के लिए तैयार हैं। आंगनवाड़ी में रंगोली बनी है, दीवारों पर बच्चों द्वारा तैयार चित्रकारी, और कागज के खिलौने टंगे हैं। मिट्टी के खिलौने, बांस के झूले, खेलने का सामान सब कोने में एक मेज पर सजे हैं। आंगनवाड़ी के दरवाजे पर लगा तोरण उसकी शोभा को और बढ़ा रहा है।

बचपन
मनाओ त्योहार
डॉक्टर-डॉक्टर
खेलते हैं!!

माता- पिता आंगन में आ रहे हैं — कुछ झिझकते हुए, कुछ उत्साहित। आज बचपन मनाया जा रहा है, कोई झूला झूल रहा है, कोई गाना सुना रहा है, तो एक कोने मे सोना और परी आज डॉक्टर और मरीज की भूमिका निभा रहे हैं।

जहां एक ओर पिता अपनी बच्ची के साथ मिट्टी से घर बनाते हुए कहते हैं —

"तू तो सिखा रही है मुझे... इतनी कहानियाँ जानती है तू?"

वहीं दूसरी ओर दिशा और गीता चाची को "एक मोटा हाथी" कविता सुना रही हैं।

बच्चों की प्यारी तुतलाती आवाज और हाव-भाव केंद्र में सभी को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं। आँगन के एक कौने मे अभिभावक अपने बच्चों के साथ खेल कर शायद अपने बचपन को फिर से जी रहे हैं।

बहुत अच्छे! मज़ा आ गया!

फूला एक कोने में खड़ी हैं। दूर से सब देख रही हैं। बच्चों की हँसी, माँ-बाप की आँखों की चमक, मिट्टी और रंगों में सनी उम्मीदें।
फूला की आँखें भर आती हैं। पर इस बार, ये आँसू खुशी के हैं।
“अब बचपन सिर्फ़ खेल नहीं है। अब वो त्यौहार बन गया है।”
“आज तो भैया आंगनवाड़ी के बच्चा भोत खुश है देखो तो कोनू मिट्टी के खिलौना बना रव, कोनू जे ब्लॉक से ऊंचे ऊंचे घर बना रव, हांथ की उंगरियन की चित्रकारी, और बच्चन के गीत-कहानी सुन के तो मजा आ गओ।"
दौड़ती सुनीता आई और बोली “देखो तो सरपंच दीदी हमाओ रेहमान अपने दादा जी के संगे खेल रव दोई जने कितनों खुश है।”
“हमे तो अपने हल्के की खबर आ गयी। आज भोत दिनन बाद अब्बू के संगे खेलबे को मौका मिलो” अब्बू की माँ ने उत्साहित स्वर में कहा और सभी माता पिता दादा दादी अपने बच्चों के साथ बचपन का त्योहार मनाने मे व्यस्त हो गए ।

जो त्योहार तो हर साल मनाओ चहिए!

नोनी के पिता जी फूला को धन्यवाद करते हुए बोले “दीदी हमे अपनों बचपन याद आ गओ। नोनी और उके दोस्तन खों खेलत देख पता लग गओ के बचपन कैसे जिओ जात।”
अब्बू के दादा जी खुद उत्साह के साथ उठ खड़े हुए और बोले “अब हमे विश्वास है के ई आंगनवाड़ी के बच्चा जब स्कूल जेहें तो पूरी कक्षा मे अब्बल रेहे उने कोनो दिक्कत न जेहे। बचपन मनाओ त्योहार हर साल मनाओ चाहिए भौत आनंद आओ।” तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण गूंज उठा।
“सही कओ दादा आफ्नो आंगनवाड़ी केंद्र कितनों बदल गओ देखो तो बच्चा कितनों कुछ सीख गए और जानन लगे एसो तो प्राइवेट स्कूल मे होत सुनो तो।” अब्बू की माँ के आँखों मे खुशी और उम्मीदें साफ झलक रही थी, अब्बू को आज पुरस्कार जो मिला।

आँगनवाड़ी
अभी तो रंग बाकी हैं!
अगला त्योहार कब?

सब की विदाई का समय हो गया पर रमेश अभी भी रंगों से खेल रहा है, उसका चित्र बता रहा है की बचपन का त्योहार कब मनाना है।

आरती ने पूछा "दीदी... ये त्योहार फिर कब मनाएँगे ?"

फूला मुस्कराई–

"जब भी कोई बचपन मुस्कराए—वही दिन फिर त्योहार बन जाएगा। बच्चों के लिए त्योहार एक दिन नहीं होता...उनके लिए तो हर दिन खेलने का, सीखने का, कहने-सुनने का दिन होता है। और जब हम उन्हें सुनने लगते हैं– तो बचपन, गाँव को बदलने लगता है।"

अगर आपने इस कहानी में किसी बच्चे की हँसी सुनी...
अगर किसी मिट्टी की रोटी में आपने अपने बचपन की महक पाई...
तो आइए, अपने गाँव में भी बचपन मनाओ त्योहार मनाइए।
हम इंतज़ार करेंगे—आपके बच्चों की कहानियों का।

यह कहानी एक समुदाय की भावना को जीवंत करती है।

यह सिर्फ एक कहानी है, लेकिन इसमें उन कई महिलाओं की यात्रा छिपी है जो हमारे सबसे छोटे बच्चों के लिए देखभाल और विकास की जगहें बनाने में दिन-रात मेहनत करती हैं। मध्य प्रदेश के छतरपुर में ये महिलाएं — आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका — देखभाल की धड़कन हैं। यह कहानी उतनी ही उनकी व्यक्तिगत कहानी है, जितनी इन आंगनवाड़ियों की, जिन्हें उन्होंने अपने हाथों से संवारा है।

आदर्श आंगनवाड़ी कार्यक्रम की शुरुआत 2022 में इस सोच के साथ हुई कि ये आंगनवाड़ियाँ बच्चों के लिए एक भरोसेमंद, स्वागतपूर्ण और खेल आधारित सीखने की जगह बनें। आज छतरपुर ज़िले की ये आंगनवाड़ियाँ रंग-बिरंगी, जीवंत और सुरक्षित जगहें बन गई हैं जहाँ हमारे सबसे छोटे बच्चे खुश होकर बढ़ते हैं।

इस बदलाव को सिर्फ देखा नहीं, महसूस भी किया जा सकता है — जब आंगनवाड़ी समय पर खुलती है, जगह साफ होती है, और नन्हें हाथों व पैरों की चहकती आवाजें गीतों और खेलों से माहौल को भर देती हैं। अब यह जगह सिर्फ बच्चों के लिए नहीं, बल्कि पूरे परिवार के लिए खुली है। माता-पिता को बुलाया जाता है ताकि वे अपने बच्चे की सीख को देख सकें, समझ सकें और जश्न मना सकें। यहाँ हर बच्चा खास है — कोई बड़ा-छोटा नहीं, हर बच्चे की संपूर्ण प्रगति का उत्सव मनाया जाता है।

सोचिए, जब एक माँ या पिता को अपने ही बच्चे से बचपन का त्योहार मनाने का न्योता मिले — उस क्षण में आंगनवाड़ी की असली शक्ति सामने आती है। कार्यकर्ता और उनकी टीम हर बच्चे की खुशी और डर को समझती हैं और उन्हें सहेजकर साथ चलती हैं। बच्चे बढ़ रहे हैं, सीख रहे हैं और सक्रिय हैं — और यह सब उनके आस-पास के बड़ों को भी साफ़ दिखाई दे रहा है। परिवार अब जुड़ाव महसूस करता है और इस जगह को बचाने और संवारने में खुद को भागीदार मानता है।

Key Education Foundation (KEF) छतरपुर ज़िले के प्रशासन के साथ इस परिवर्तन यात्रा में साझेदार रहा है। इन आंगनवाड़ियों को आनंदमय और समृद्ध सीखने की जगह बनाने में खेल को केंद्र में रखा गया है। यह परिवर्तन सिर्फ रंग-रोगन या सामग्री से नहीं आया — इसमें साझा सोच, ज़रूरी संसाधन, बच्चों के लिए उपयोगी सामग्री, और कार्यकर्ताओं का खेल और सीख की भावना को आत्मसात करना शामिल है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आंगनवाड़ी और परिवारों के बीच एक भरोसेमंद रिश्ता बना है। जिले से लेकर घर तक का यह जुड़ा हुआ देखभाल का घेरा ही स्थायी परिवर्तन की नींव है। लगातार प्रशिक्षण और CLAP जैसे तकनीकी साधनों ने इस घेराव को और मजबूत किया है। KEF खुद को इस यात्रा का भागीदार मानकर गर्व महसूस करता है — यह सिर्फ समर्थन नहीं, बल्कि साथ में चलने और हर पल को मनाने का सफर है।

बचपन का जश्न मनाने के लिए पूरा गाँव एक साथ आना चाहिए।

डिजाइनर- मून अरूण

KEY EDUCATION FOUNDATION

bachpan manao

ये "बचपन का त्योहार" क्या है? क्या ये कोई खास त्योहार है? इसे कौन मनाता है... और क्यों?

चलिए हमारे साथ छतरपुर ज़िले की एक आंगनवाड़ी की सैर पर, जहाँ फूला दीदी के एक छोटे से विचार ने पूरे ज़िले में बचपन का जश्न शुरू कर दिया।

क्या पता, इस कहानी के अंत तक आप भी बचपन का त्योहार मनाने लगें!

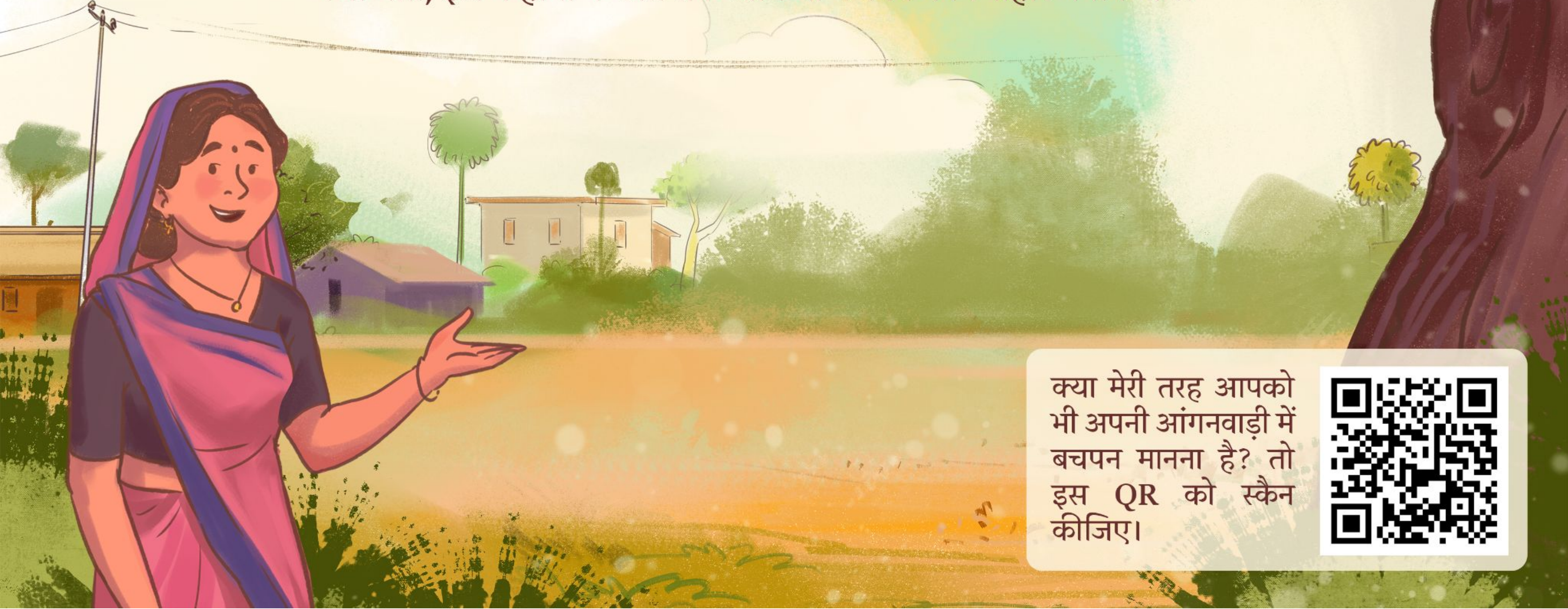

क्या मेरी तरह आपको भी अपनी आंगनवाड़ी में बचपन मानना है? तो इस QR को स्कैन कीजिए।